जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

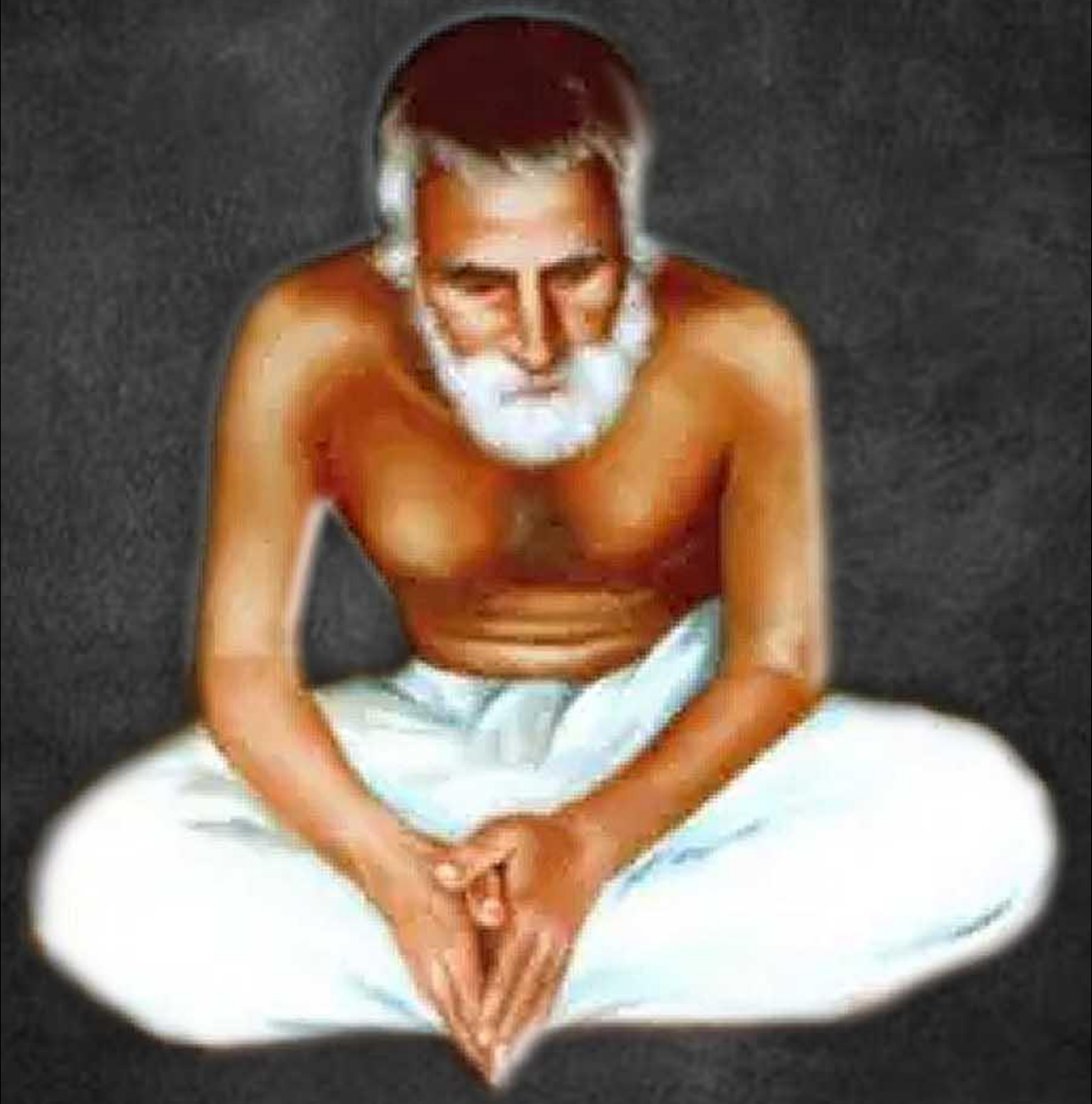

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

विवाहित व्यक्ति का कर्त्तव्य

श्रीलगुरुदेव

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर के पदाश्रित कोलकाता के कोई एक सेठ नया नया विवाह करने के बाद उनके विवाहित जीवन में किस प्रकार से हरिभजन करने का सुयोग मिल सकता है, उस विषय में उपदेश लेने के लिए ॐ विष्णुपाद श्रीश्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद के पास आये। श्रील प्रभुपाद ने जब उस व्यक्ति को बताया कि उसके विवाहित जीवन में हरिभजन

करने के लिए अनेक विघ्न उपस्थित हो सकते हैं तो वह व्यक्ति बहुत दुःखी हुआ। इसके बाद श्रील प्रभुपाद के साथ उक्त व्यक्ति एक दिन कुलिया के कछार पर श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज के श्रीचरणों में उपस्थित हुआ। श्रील बाबाजी महाराज के पास बातों-बातों में उस व्यक्ति के विवाह की बात चल पड़ी। श्रील बाबाजी महाराज ने कहा,— "हाँ, तो ***बाबू ने विवाह कर लिया है, अच्छी बात है। अब वे प्रतिदिन अपने हाथों से भगवान के भोग की सामग्री तैयार करके, भोग लगाने के बाद उस प्रसाद को अपनी पत्नी को खिलाकर 'वैष्णव' - बुद्धि

से पत्नी का बचा हुआ खाएँगे। उसके प्रति भोग- बुद्धि के बदले में, वह कृष्ण की दासी है, इस विचार से गुरु बुद्धि करेंगे। ऐसा होने पर ही ***बाबू का मंगल होगा। सारा जगत पृथ्वी के सारे धन - रत्न - स्त्री पुरुष सभी को एकमात्र कृष्ण की सेवा में ही लगा दें। इसे पत्नी या अपनी सेविका न समझकर उसे 'कृष्ण की सेविका' समझकर सम्मान करना।"

श्रीलगुरुदेव